Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 2 | Issue 1 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

मन्नू भंडारीः जीवन, साहित्य और यथार्थवादी लेखन की परंपरा

[1]संगीता सिंह, [2]डॉ. संतोष कुमार सिंह

[1]शोधार्थी, [2]पर्यवेक्षक

[1–2]विभागः हिन्दी, जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, (सारण), बिहार

सार

मन्नू भंडारी भारतीय हिंदी साहित्य की एक प्रमुख लेखिका थीं, जिनका लेखन यथार्थवादी प्रवृत्तियों, सामाजिक चेतना, और स्त्री–विमर्श को नए आयाम देने के लिए जाना जाता है। उनका जन्म एक रूढ़िग्रस्त मारवाड़ी परिवार में हुआ, लेकिन उनके पिता के समाज सुधारवादी विचारों ने उन्हें शिक्षा और स्वतंत्र चिंतन की दिशा में प्रेरित किया। मन्नू जी का साहित्यिक जीवन उनके व्यक्तिगत अनुभवों, समाज में स्त्रियों की स्थिति, और पारिवारिक संबंधों की जटिलताओं को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है। उनके प्रमुख उपन्यास आपका बंटी और महाभोज हिंदी साहित्य में मील का पत्थर माने जाते हैं। उनका लेखन सरल, सजीव और यथार्थपरक था, जो पाठकों को सहजता से जोड़ता है। उनकी कहानियाँ सामाजिक विषमताओं, नारी की आत्मनिर्भरता, और बदलते मूल्यों को प्रतिबिंबित करती हैं। साहित्य में उनके योगदान को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, लेकिन उन्होंने आपातकाल के दौरान पद्मश्री जैसे सम्मान को अस्वीकार कर अपनी दृढ़ता और ईमानदारी का परिचय दिया। उनके लेखन में सामाजिक प्रतिबद्धता, भावनात्मक गहराई, और स्त्री–पुरुष संबंधों की सूक्ष्म समझ देखने को मिलती है।

मुख्य शब्दः

मन्नू भंडारी, हिंदी साहित्य, नारीवाद, यथार्थवाद, आपका बंटी, महाभोज, समाज सुधार, स्त्री विमर्श, कथा साहित्य, समकालीन लेखन।

भूमिका

मन्नू भण्डारी का जन्म 3 अप्रैल 1931 को भानपुरा (मध्य प्रदेश) नामक छोटे से गाँव में हुआ था। मन्नू जी भाई–बहनों में सबसे छोटी तथा पिताजी की लाडली सन्तान थीं। मन्नू जी के पिता का नाम श्री सुखसंपत राय तथा माता का नाम श्रीमती अनूप कुँवरि था। आपकी माता उदार, समर्पिता और स्नेहिल भारतीय महिला की प्रतिमूर्ति थीं। आपने जिस परिवार में जन्म लिया, वह राजस्थान का अत्यन्त रूढ़िग्रस्त मारवाड़ी परिवार था, इतना रूढ़िग्रस्त की 50 वर्षों के बाद आज भी घोर पर्दा प्रथा धरोहर के रूप में वहाँ पल रही है, लेकिन इस परिवार के मुखिया और मन्नू जी के पिता श्री सुखसंपत राय भण्डारी, चूँकि आर्य समाजी और अपने समय के समाज सुधारक थे, अतः सौभाग्य से किसी सीमा तक कुछ स्वतन्त्रताएँ सभी बच्चों को प्राप्त हो गई थी। मन्नू जी के पिताजी समाज–सुधारक थे, इसका प्रभाव मन्नू जी के व्यक्तित्व पर पूर्ण रूप से पड़ा। पिता जी की इसी व्यापक विचारधारा के कारण आप तथा आपकी बहनों की शिक्षा में कोई बंधन पिताजी ने नहीं थोपा द्य आपका वास्तविक नाम महेन्द्र कुमारी है, लेकिन माता–पिता प्यार से 'मन्नू' ही पुकारते थे। यही नाम आगे प्रचलित हो गया।

मन्नू जी अपने जिस रूप और व्यक्तित्व को लेकर हिन्दी जगत् के सम्मुख आयीं, उसके निर्माण में पिता का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। पिता नितांत क्रोधी स्वभाव के अहंवादीऔर आदर्शवादी थे। मन्नू जी के पिता समाज–सुधारक व समाज–सेवी होने के कारण विभिन्न राजनैतिक दलों के लोगों से निरन्तर चर्चाओं और बहसों में उलझे रहते

थे। पिता जितने क्रोधी स्वभाव के थे,माता उनसे सर्वथा प्रतिकूल स्वभाव की थीं। वह निरक्षर होते हुए भी उदार, समर्पिता, सहनशील थीं। माता–पिता के परस्पर विरोधी स्वभाव और मिले–जुले संस्कारों से ही मन्नू जी का व्यक्तित्व बना। वह घर में सबसे छोटी थीं, अतः उनका बाल्यकाल बड़े ही उत्फुल वातावरण में व्यतीत हुआ।

शिक्षा – सन् 1940 के लगभग का समय आज के समान नहीं था। शिक्षा के सम्बन्ध नारी के लिये अनेक बंधन थे। यह कहा जा सकता है कि नारी शिक्षा का प्रसार मध्यवर्ग में विशिष्ट परिवारों तक ही हुआ था। मन्नू जी की प्रारम्भिक शिक्षा अजमेर के सावित्री स्कूल में हुई। इसी पाठशाला से इण्टर की परीक्षा उत्तीर्ण की। इण्टर पास करने के बाद वह अपने बड़े भाई–बहनों के पास कलकत्ता चली आई और वहीं कलकत्ता विश्वविद्यालय से सन् 1941 में बी0ए0 की उपाधि प्राप्त की। सन् 1952 ई0 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से हिन्दी में परास्नातक किया। मन्नू जी ने स्नातक तथा परास्नातक दोनों उपाधियाँ बहिःस्थ छात्रा के रूप प्राप्त की।

मन्नू जी को लेखन– संस्कार विरासत में मिला। उनके पिताजी हिन्दी पारिभाषिक शब्दकोश' के आदि निर्माता रह चुके थे। मन्नू जी की युवावस्था में स्वाधीनता की लड़ाई अपनी चरम सीमा पर थी। अपनी क्षमतानुसार मन्नू जी ने भी इस लड़ाई में हिस्सा लिया। जुलूस निकालना, प्रभात फेरियों में घूमना, भाषण देना आदि गतिविधियाँ उनकी उस आयु का अविस्मरणीय अंग बन गई।

मन्नू जी के शब्दों में– "आज जब सोचती हूँ, तो लगता है–कितना रोमानी था वह जोश, लेकिन जीवन से लबालब। उन दिनों के भाषणों ने ही एक सफल प्रवक्ता बना दिया। उस समय हर बात की तीव्र और तीखी प्रतिक्रिया होती थी..... कहीं भी अन्याय या अनुचित देखा, भनभना उठती थी...तुरन्त ' रि– एक्ट' करने की इसी प्रवृत्ति ने शायद

लेखक बना दिया और उस समय प्रतिक्रिया एक उबाल के रूप में होती थी ...... बाद में अभिव्यक्ति के रूप में होने लगी।''[13]

अध्यापकीय जीवन– परास्नातक करने के बाद मन्नू जी ने कलकत्ता के ' बालीगंज शिक्षा सदन' में नौ वर्ष अध्यापन कार्य किया। इसके उपरान्त 3 वर्ष कलकत्ता स्थित रानी बिड़ला महाविद्यालय' में अध्यापन कार्य किया। सन् 1961 में मन्नू जी अध्यापिका से प्राध्यापिका बनी और दिल्ली के मिरांडा हाऊस महाविद्यालय में प्राध्यापिका के रूप में कार्यभार सम्भाला द्य माधुरी वाजपेयी का कथन है– '' अध्यापन रहा है।"[14]

मन्नू जी का प्रिय कार्य

अध्यापन सम्बन्धी अपनी रूचि के विषय में उन्होंने एक पुरूष एक नारी' नामक रचना में स्वयं स्वीकार किया है– "यू शौक में आकर लिख लिया करती हूँ, लेकिन मेरी असली लाइन तो पढ़ना ही है।"[15]

विवाह और पारिवारिक जीवन– मन्नू जी कलकत्ते में जिस स्कूल में अध्यापन– कार्य करती थीं, उसी के माध्यम से राजेन्द्र यादव से उनका परिचय हुआ। राजेन्द्र यादव उस समय हिंदी के एक प्रतिष्ठित साहित्यकार के रूप में मान्यता पा चुके थे।" परिचय यदि दो समरूचि वाले व्यक्तियों में हो, तो वह शीघ्र ही विशिष्टिता की श्रेणी गाँठ लेता है। शायद साहित्यिक लगाव ही दोनों के पारस्परिक सम्बन्धों की कड़ी बन गया।"

मन्नू जी का लेखन उस समय आरम्भ हो चुका था। इसी लेखन के सिलसिलेवश मन्नू जी का परिचय राजेन्द्र जी से घनिष्ठ हो गया। लिखने का उत्साह मन्नू जी में उस

[13]प्रो0 किशोर गिरड़कर– मन्नू भण्डारी कथा साहित्य पृष्ठ 3
[14]माधुरी वाजपेयी – उपन्यासकार मन्नू भण्डारी (एक अध्ययन
[15]प्रो0 किशोर गिरड़कर – मन्नू भण्डारी का कथा साहित्य पृ0 5

समय काफी उफान पर था और उसी उत्साह में वे अपनी स्वभावगत सहजता से कहानियों के कथासूत्रों पर चर्चा करते हुए श्री यादव के पास जाती थीं। इसी माध्यम से उनके बीच और घनिष्ठता हो गई। फलस्वरूप 1959 ई0 में दोनों ने अन्तर्जातीय विवाह कर लिया और उनके प्रेम–सम्बन्धों की परिणति एक स्थायी सम्बन्ध में हुई। इस विवाह का परिवार वालों ने विरोध किया, लेकिन एक भेंटवार्ता में मन्नू जी ने बताया कि – '' विवाह के सम्बन्ध में ऐसा कोई विरोध नहीं था थोड़ा–बहुत जो विरोध था, वह केवल पिताजी की ओर से था और वह भी इसलिये नहीं कि वे अन्तर्जातीय विवाह के विरूद्ध थे, बल्कि इसलिये कि उन दिनों राजेन्द्र यादव कहीं स्थायी नहीं थे, केवल फ्री लांसर लेखक थे।''

लेखन कार्य करते हुए सन् 1964 में कलकत्ता छोड़कर दोनों दिल्ली में जा बसे। राजेन्द्र यादव से विवाह के पश्चात् मन्नू जी का लेखन तथा अध्यापन और अधिक निखर आया– ''यादवजी के अनुभवों और सुझावों ने मन्नू जी के लेखन में नई चमक उत्पन्न की।''[16] 'मन्नू जी का अनेक साहित्यकारों से परिचय हुआ। मन्नू जी को इस परिवार के माध्यम से सत्येन्द्र शरत, मोहन राकेश, कमलेश्वर जैसे प्रतिष्ठित साहित्यकार प्राप्त हुए। जीवन की इसी धारा में चलते हुए सन् 1961 में मन्नू जी ने एक पुत्री को जन्म दिया जिसका नाम 'रचना' है, लेकिन प्यार से उसे सब टिंकू' पुकारते थे। मन्नू जी उसे अपना मित्र मानती हैं।

साहित्यिक जीवन/लेखन जैसा की पहले कहा जा चुका है कि 'मन्नू जी को लेखन–संस्कार विरासत में मिला था। मन्नू जी को जो कोई एक बार देखता तो उसे उनके माथे की बड़ी सी ऽ बिंदी' याद रह जाती थी। विश्व में भारतीय नारी की पहचान

[16]प्रो0 किशोर गिरड़कर – मन्नू भण्डारी का कथा साहित्य पृ0 6

बिंदी' है। मन्नू जी सिर्फ ऽ बिन्दी' से ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण व्यक्तित्व से आम घरेलू भारतीय नारी का अहसास दिलाती हैं। गिरिराज किशोर जी ने – मन्नू भण्डारीः 'जिन्दगी की समझदारी' लेख में लिखा है–"मन्नू जी की पहचान उस बिन्दी से शुरू हुई थी और आज रचनाओं तक पहुँच गई है। मन्नू जी की साहित्यिक लोकप्रियता का कारण उनका सरल–सटीक भाषा में लिखा गया लेखन है, जहाँ पर सजीवता है, यथार्थ है, कोई बनावट नही।" स्त्री–लेखन में तथाकथित 'बोल्डनेस' के आग्रहों–चर्चाओं को खारिज करते हुए कथा–लेखन को एक नया आयाम दिया है। बगैर स्त्री–विमर्श का शोर और बौद्धिकता का कोई आतंक रचे मन्नू भण्डारी ने वह मुकाम हासिल किया, जो संभवतः दूसरी किसी लेखिका को हासिल नहीं है।''[17]

यहाँ एक बार फिर मन्नू भण्डारी के व्यक्तित्व पर लौटती हूँ।" उनका व्यक्तित्व एक खामोश व्यक्तित्व है। उनके जीवन में बड़ी परेशानियाँ रही हैं और उन पर उन्होंने कोई पर्दा नहीं डाला है। संयोग से उन्हें पति भी राजेन्द्र यादव जैसे मिले थे, जो पर्दा डालना जानते ही नहीं थे। सिर्फ पर्दा उठाना जानते थे, गिराना नहीं जानते थे। इस विषय में ज्यादा कुछ कहने की जरूरत नहीं है, क्योंकि दोनों ने ही एक दूसरे के बारे में खुलकर लिखा है और निम्रतापूर्वक एक दूसरे को ' एक्सपोज' किया है, लेकिन इस प्रकटीकरण में भी मन्नू भण्डारी बड़ी संयत हैं।''[18]

[17]संवाद– उमाशंकर सिंह– पाखी पत्रिका, जनवरी 2016 पृ0 8
[18]संवाद– उमाशंकर सिंह– पाखी पत्रिका, जनवरी 2016 पृ0 15

आधुनिकता की जो विसंगति है, उसे मन्नू भंण्डारी, उनकी रचनाओं और उनके सम्प्रेषण ने बहुत जीवटता के साथ झेला है।"लेकिन इन सबके दरमियान उनका जो फॉर्म है, उनका जो व्यक्तित्व है....वह सतत गम्भीर है। यहाँ फिर एक शेर याद आ रहा है"[19]

कह रहा है शोरे दरिया से समंदर का सकून

जिसमें जितना जोर है, उतना ही वो खामोश है'

मन्नू भण्डारी में जो खामोशी और गाम्भीर्य है, वह उनकी रचनाधर्मिता और उनके लेखकीय व्यक्तित्व की संगति में है। मन्नू जी के साहित्य की लोकप्रियता का कारण, राजेन्द्र यादव के शब्दों में– " किसी भी कलाकार की लोकप्रियता के मूल में दो ही कारण दिखाई देते हैं– एक या तो छिछोरापन को अभिव्यक्ति दे, या फिर वह जनसामान्य की संवेदना से जुड़े। यही दूसरी बात मन्नू की कहानियों में भावात्मक अपील है, जिसके कारण मन्नू भण्डारी समकालीन कहानी–लेखकों को कई गुना पीछे छोड़ गई हैं।"

"नये युग के कहानीकारों में मन्नू भण्डारी का अपना अलग ही स्थान है। मन्नू का साहित्य कहानी, उपन्यास और नाटक इन तीनों विधाओं से परिपूर्ण है। वे एक समकालीन कहानी–लेखिका हैं। मन्नू जी के बिना आधुनिक कथा–साहित्य की चर्चा ही अधूरी लगती है। उनका समग्र साहित्य उनके सीधे–सादे और सच्चे व्यक्तित्व का आईना है। तेजस्वी विचार रूढ़िमुक्त साहस और घरेलू आत्मीयता की सहजता ही मन्नू की सबसे बड़ी शक्ति है। वह कहानी लिखती नहीं, पाठक को अंतरंग घनिष्ठता में लाकर कहानी

[19]संवाद– उमाशंकर सिंह– पाखी पत्रिका, जनवरी 2016 पृ0 15

सुनाती हैं। बेहद सहज और सीधे पाठक तक पहुँचने वाली ये कहानियाँ हर स्तर और क्षेत्र में चर्चित रही हैं।"[20]

मन्नू भण्डारी की कहानियाँ जीवन से जुड़ी हुई हैं। कहानियों में पारिवारिक जीवन, पति–पत्नी के बनते–बिगड़ते सम्बन्ध एवं उन्मुक्त प्रेम आदि का चित्रण सूक्ष्मता से हुआ है। मन्नू की कहानियाँ पाठकों को कलादृष्टि के साथ–साथ जिन्दगी के 'आज' को समझने की दृष्टि देती हैं।" व्यक्ति का व्यक्तित्व परिवेश से बनता है, जो अपने साथ सामाजिक विषमताओं एवं संवेदनाओं का एक पूरा संसार लिये रहता है। इस परिवेश से जुड़ना और जुड़कर लिखना स्वयं अपनी सजीवता के लिए आवश्यक है। वस्तुतः परिवेश हर व्यक्ति को मिलता है, किन्तु उसे भोगने की प्रक्रिया हर एक की अलग–अलग हुआ करती है।"[21]

मन्नू भण्डारी के व्यक्तित्व– निर्माण में कुछ हद तक माता–पिता दोनों का सहयोग रहा हैं। उनको बचपन में राजनीतिक चर्चाओं में सहभागी होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उनके पिता क्रोधी स्वभाव के अहंवादी और आदर्शवादी थे। उनकी माता उदार, समर्पिता एवं सहनशील थीं। माता–पिता के इस परस्पर विरोधी स्वभाव के कारण मन्नू जी के व्यक्तित्व का निर्माण हुआ। उन्होंने अपने जीवन में माँ, बेटी, बहन, पत्नी, प्रेमिका आदि सभी भूमिकाएँ बखूबी निभायी हैं। इन भूमिकाओं के साथ–साथ उन्होंने लेखिका और अध्यापिका की भी भूमिका अदा की है।

[20]प्रदीप सी लाड्– 'मन्नू भण्डारी की कहानियों के प्रमुख पात्र, पृ0 13
[21]डॉ0 श्याम शर्मा– 'आधुनिक हिन्दी नाटकों में नायक', पृ0 64

मन्नू जी स्वयं कहती हैं– " इन सब में मैं दरअसल क्या हूँ ?– तो यों समझिये कि इन सबका मिला–जुला रूप ही मेरा वास्तविक व्यक्तित्व है और मैं वही बनीं रहना चाहती हूँ।"[22]

मन्नू जी अपनी माँ के प्रति अपेक्षाकृत अधिक संवेदनशील थीं। अतः माँ के प्रति उनका जो लगाव था, वही आगे चलकर लेखन का विषय सिद्ध हुआ।

इस सन्दर्भ में डॉ0 साधना अग्रवाल का कथन द्रष्टव्य है– "मन्नू के नारी पात्र पुरूष के प्रति संवेदनशील एवं स्नेहशील होकर भी कुछ ईष्यालु तथा प्रायः उसके प्रति स्पर्धाभाव रखने वाले एवं प्रतिद्वंदी हैं। नारी के जिस स्वतंत्र अस्तित्व एवं व्यक्तित्व की बात मन्नू के साहित्य में मुखर है, वास्तव में, वह सुधी आलोचक को कम ही दृष्टिगत होती है।"[23]

इस प्रकार, पारिवारिक वातावरण तथा अनेक स्थानों के अनुभवों के कारण मन्नू जी का साहित्य–लेखन प्रभावित हुआ। विवाहोपरान्त अपने लेखन के संदर्भ में मन्नू जी का स्वयं कहना है कि– जहाँ तक मेरे लेखन का सवाल है, निश्चय ही, राजेन्द्र के साथ ने उसे सँवारा और समृद्ध बनाया है। अनुकूल वातावरण, समानधर्मा मित्र मण्डली, हर समय लेखन और लेखकीय समस्याओं से गुजरना, इस सबने एक प्रेरणास्पद वातावरण तो मुझे दिया ही, खुद एक बेहद समर्पित लेखक होने के नाते मेरे लेखन कार्य को सदैव उनके द्वारा प्रोत्साहन मिलता रहा है, जो संस्कार मुझे पिता द्वारा मिले, विवाहोपरांत पति द्वारा उसका परिष्कार हुआ, परंतु उनका अपना स्वतंत्र अनुभूति का प्रभाव अपने साहित्य में यत्र–तत्र व्याप्त जरूर है।

[22]अजीत कुमार– 'मन्नू जी के तमाम रंग, 'त्रिशंकु कहानी संग्रह' पृ0 15
[23]डॉ0 साधना अग्रवाल– वर्तमान हिन्दी महिला कथा लेखन और दाम्पत्य–जीवन (विश्लेषण तथा आकलन) पृ0 180

विवाह के बाद मन्नूजी को कुछ प्रसंगों एवं अवसरों पर परिवार तथा मित्रों के परिहास का भागी होना पड़ा। लेकिन मन्नू जी अविचलित रहकर आगे बढ़ती गई। विवाह के बारे में उनकी माँग सम्पूर्ण ईमानदारी की है। विवाह को मन्नूजी ऐसा बंधन मानती हैं कि उसे मनुष्य स्वयं अपनाता है। यदि यह बंधन मनुष्य को कष्टप्रद लगे, तो उससे बाहर निकलने का कोई उपाय नहीं होता। विवाह मानव–जीवन की आवश्यकता है। विवाह के बगैर मनुष्य पूर्णत्व को प्राप्त नहीं कर सकता। वैवाहिक जीवन में परस्पर सहयोग तथा समन्वय पति–पत्नी द्वारा स्थापित करके उसें कायम करने की आवश्यकता, उनके साहित्य में निहित है। लेखिका के मतानुसार– " विवाह एक ऐसा बंधन है, जिसमें बँधा हुआ आदमी छटपटाए और न बँधा हुआ भी छटपटाए।"[24]

जीवन के संदर्भ में मन्नूजी की मान्यता है कि–'' जिन्दगी अपनी शर्तों पर या अपने मनचाहे ढंग से शायद ही किसी को मिलती हो। जो नहीं मिला, उसी की चोट से हम जीवन भर टूटते–बिखरते रह जाते हैं या जो कुछ भी मिला, उसी को भरपूर निचोड़–वसूल कर सार्थकता या उपलब्धि का संतोष भी पा सकते हैं। भरसक दूसरी तरह के रवैये को अपनाने की कोशिश की है।"[25]

मन्नू जी ने अपनी लेखन–मान्यताओं को स्पष्ट करते हुए कहा है– " मेरे लिए लिखना दो तरह का होता है। एक वह, जो मैं केवल कलम लेकर कागज पर लिखती हूँ औरजो काफी लम्बे अन्तराल के बाद ही संभव हो पाता है। दूसरा वह, जो बिना कागज– कलम के दैनंदिन कामों के साथ–साथ बैकग्राउंड म्यूजिक की तरह मन की परतों पर निरंतर ही चलता रहता है। बाहर वालों के लिए महत्त्वपूर्ण वह है, जो कागज पर लिखा गया और उन तक पहुँच गया हैं। लेकिन मेरे लिए तो ' मेरा मानसिक लेखन' ही महत्त्वपूर्ण

[24]माधुरी वाजपेयी – उपन्यासकार मन्नू भण्डारी (एक अध्ययन) पृ0 11
[25]माधुरी वाजपेयी– उपन्यासकार मन्नू भण्डारी (एक अध्ययन) पृ0 11

है, क्योंकि इसके दौरान ही रॉ – मैटिरियल का वह भंडार जमा होता है, जिसमें से कुछ चीजें चुनकर, उन्हें काट–छाँट और तराश कर तैयार माल की तरह मै बाहर ला पाती हूँ।"[26]

मन्नूजी समाज में जो भी घटित होता है, उसे ही लेखन–सामग्री के रूप में प्रयोग करती हैं। पाठकों के अनुभवों से अपना अनुभव एकरूप कर देती हैं। उन्होंने खुद कहा है– '' कभी– कभी कोई ' ब्रिलियण्ट आइडिया' लेखन के लिए जरूर उकसाता है। पर जब तक वह जीवन के साथ पूरी तरह गुँथ नहीं जाता, कहानी के रूप में उसे ढालना मेरे लिए संभव नहीं होता। जीवन की धड़कन से भरपूर स्थितियाँ, विचार या समस्याएँ ही मुझे लिखने के लिए प्रेरित करती हैं।"[27]

इस प्रकार, मन्नूजी के लेखन में जो यथार्थ व्याप्त है, वह उनके निजी अनुभवों का निचोड़ है। इसीलिए उनकी लेखन – मान्यताएँ तथा प्रक्रिया वर्तमान से सौ प्रतिशत जुड़ जाती है। मन्नूजी की लेखन–प्रक्रिया में कही भी आदर्श का पुट नहीं है, क्योंकि मन्नूजी स्वातंत्र्योत्तर काल की लेखिका हैं। संभवतः मन्नूजी ने प्रेमचंद जी के इस कथन का भली–भाँति पालन किया है आदर्श से काम नहीं चलेगा.......।"[28]

इसी प्रकार, मन्नूजी की लेखन – मान्यताओं के संदर्भ में राजेन्द्र यादव ने कहा है– "व्यर्थ के भावोच्छ्वास में नारी के आँचल का दूध और आँखों का पानी दिखाकर उसने

[26]माधुरी वाजपेयी– उपन्यासकार मन्नू भण्डारी (एक अध्ययन) पृ0 13
[27]सं. मोहन गुप्त– मन्नू भण्डारी – प्रतिनिधि कहानियाँ पृ0 5
[28]सं. बालकृष्णराव / श्रीराम शर्मा– प्रकीर्णिका (लमन्ही में जन्म एवं अंतिम बीमारी) पृ0 65

(मन्नू भण्डारी) पाठकों की दया नहीं वसूली .... वह एक यथार्थ के धरातल पर नारी का नारी की दृष्टि से अंकन करती है।"[29]

अतः मन्नूजी की लेखन–मान्यताएँ आधुनिकता के साथ–साथ व्यक्तिगत अस्तित्व तथा नैतिकता की यथार्थ नई परिभाषा को उद्‌घटित करती हैं।

मन्नू जी की लोकप्रियता का प्रमाण है– उनकी कहानियाँ और उपन्यास। कहानी–संग्रह यही सच है', ' मैं हार गई', ' त्रिशंकु' तथा उपन्यास ' आपका बंटी' और ' महाभोज' उनके लेखन की चरम उपलब्धि है। उनकी कहानियों पर फिल्म भी बनी है ये कहानियाँ हैं ' ए खाने आकाश नाई' और ' यही सच है' मन्नू भण्डारी के कथा–साहित्य में संवेदनशील पीड़ित मनुष्य का आन्तरिक संसार उपस्थित है। मानव–जीवन के इसी चेहरे को मन्नू का रचना–संसार रेखांकित करता चलता है। जीवन्त अनुभूति की विश्वसनीयता के साथ मन्नूजी का कथा– साहित्य सृजित होता है।

सम्मान / पुरस्कार–

मन्नू जी को उनकी साहित्य–सेवा के अनुरूप निम्नलिखित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है –

1. 'महाभोज' उपन्यास को सन् 1979–80 में ' भारतीय भाषा परिषद' की ओर से 11000 रु. का पुरस्कार प्राप्त हुआ।
2. 'महाभोज' उपन्यास को 'उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान' द्वारा 6000 रु. का पुरस्कार दिया गया।

[29]सं. मोहन गुप्त, मन्नू भण्डारी– प्रतिनिधि कहानियाँ

Global Insights, Multidisciplinary Excellence

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 2 | Issue 1 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

3. सन् 1980–81 में 'केंद्रीय हिन्दी निदेशालय की ओर से 'अहिंदी भाषी' क्षेत्र की हिंदी लेखिका के रूप में मन्नूजी को सम्मानित किया गया।
4. सन् 1982–83 का क्रमशः ' भारतेन्दु हरिश्चंद्र एवार्ड' एवं ' पीपल्स एवार्ड' देकर सम्मानित किया गया।
5. सन् 2008 में मन्नू जी को उनकी आत्मकथा ' एक कहानी यह भी' पर 'व्यास सम्मान' मिला।

इन प्रमुख पुरस्कारों के अतिरिक्त मन्नूजी को सन् 1976 में आपात स्थिति के दौरान 'पद्म श्री' पुरस्कार दिये जाने का निर्णय हुआ था, साथ ही साहित्यकला परिषद्, दिल्ली ने भी उन्हें पुरस्कृत करना चाहा था, किंतु दोनों ही पुरस्कार उन्होंने विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिए। इस संदर्भ में डॉ0 अनीता राजूरकर का कथन हैं– "जिस सरकार ने भारतीय जन सामान्य पर आपात् स्थिति लादी, उस स्थिति में उस सरकार का विरोध करना मामूली बात नहीं है। मन्नू जी की हिम्मत और दृढ़ता इस बात से स्पष्ट होती है। 'साहित्य कला परिषद' दिल्ली द्वारा दिया गया सम्मान, आज समाज में उचित नहीं समझा जाता है। जनसाधारण की धारणा है कि चापलूसी के कारण वह पुरस्कार आसानी से किसी को भी मिल सकता है। इसलिए इस ढंग का पुरस्कार मन्नूजी ने अस्वीकृत कर दिया है।

हिन्दी साहित्य–जगत में यथार्थ लेखन की परम्परा में मन्नूजी का स्थान अग्रणी है। मन्नूजी सन् 1950 के उपरान्त ही हिन्दी साहित्य की लेखिका के रूप में प्रतिष्ठित हुई। स्वाधीनता के उपरांत समष्टिगत मूल्यों का पतन हो गया। उनके स्थान पर व्यष्टिगत विचारधारा ने जोर पकड़ा। अतः नारी भी अपने स्वतंत्र अस्तित्व तथा अधिकारों के प्रति सचेत हुई। इसी चेतना ने साहित्य में नारीवाद को स्थापित करने में मदद की। हिंदी

साहित्य में नारीवाद को यथार्थ रूप से स्थापित करने का श्रेय मन्नूजी को अधिक जाता है। नारी की पारिवारिक, सामाजिक पीड़ा तथा घुटन को यथार्थ रूप में रूपायित करने का प्रयास मन्नूजी ने अपने कथा–साहित्य में किया है।

निष्कर्ष

मन्नू भंडारी का साहित्यिक योगदान हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उनकी कहानियाँ और उपन्यास पाठकों को न केवल एक नई सोच देते हैं, बल्कि समाज की वास्तविकताओं से अवगत कराते हैं। उन्होंने स्त्री जीवन की जटिलताओं, सामाजिक अन्याय, और मानवीय संबंधों की सूक्ष्मता को अपने लेखन में प्रभावी रूप से उकेरा। उनकी भाषा सहज और प्रभावशाली थी, जिसने उन्हें आम पाठकों के बीच भी लोकप्रिय बनाया। उनके साहित्य में नारीवाद को बिना किसी आक्रामकता के सहज रूप में प्रस्तुत किया गया, जिससे वे समकालीन हिंदी साहित्य में अपनी अनूठी पहचान स्थापित कर सकीं। मन्नू भंडारी केवल एक लेखिका ही नहीं, बल्कि भारतीय समाज में बदलाव की एक सशक्त आवाज थीं, जिनका लेखन आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणादायक रहेगा।

संदर्भ

- खोदरिया, एन. (2024)। सीमा पर महिलाएँ: विभाजन इतिहास का एक उत्तर–औपनिवेशिक नारीवादी अध्ययन और महिलाओं के विभाजन उपन्यास में मेस्टिजा चेतना (मास्टर थीसिस, सैन डिएगो स्टेट यूनिवर्सिटी)।
- भरुचा, एन. (2023)। भारतीय महिलाओं का लेखन: अतीत से वर्तमान तक। सिनर्जी, 19(1), 39–56।

- द्विवेदी, एस. (2023)। माँ–बेटी के रिश्ते के लेंस के माध्यम से लैंगिक सीमाओं को पार करना: कृष्णा सोबती की सुनो, लड़की! और गीतांजलि श्री की समाधि रेत। संवाद: साहित्यिक प्रशंसा के लिए समर्पित एक पत्रिका, 19(01), 32–50।
- कीर्तिकर, जे. एल. (2023)। सरस्वती की स्याही: भारतीय महिलाओं के विभाजन के बाद के साहित्य में स्मृति, शरीर और भारत माता (डॉक्टरेट शोध प्रबंध, ओपन एक्सेस ते हेरेन्गा वाका–विक्टोरिया यूनिवर्सिटी ऑफ वेलिंगटन)। सोबती, आर. सी., और सोबती, वी. (संपादक)। (2023)। कोविड–19 महामारी में फ्रंटलाइन वर्कर्स और योद्धा के रूप में महिलाएँ। रूटलेज।
- मधेसिया, डी. के., और भाटी, एम. (2023)। भारतीय अंग्रेजी उपन्यासों में भारतीय महिलाओं का चित्रण। एशियाई और प्रशांत आर्थिक समीक्षा, 16(1), 8–14।